Sun Temple of Konarka

कोणार्क का सूर्य मंदिर

Navin Kumar

Professor

Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005

B.A. 2nd Year,
Paper –3, Indian Art, Architecture & Archaeology

उड़ीसा शैली के मंदिरों में कोणार्क का सूर्य मंदिर अपना विशेष महत्व रखता है। यह मंदिर पूरी से प्रायः 32 किलोमीटर की दूरी पर समुद्र के निकट उत्तर पूर्व दिशा में स्थित है। इसका निर्माण केसरी कुल के नरसिंहदेव प्रथम ने सन् 1238–65 ई0 के बीच करवाया था। इस मंदिर की संरचना, स्थापत्यकला तथा शिल्पकला दोनों ही दृष्टिकोण से अनुपम है। निरन्तर धूप तथा वर्षा के कारण यह कृष्णकाय हो गया है जिसके कारण इसे काला पगोडा की संज्ञा भी दी जाती है।

कोर्णाक मंदिर सूर्य मंदिर है। भारत में सूर्य मंदिरों की संख्या अत्यन्त कम है। कुछ विख्यात सूर्य मंदिरों में कश्मीर की मार्तंड मंदिर और गुजरात के मोधेरा मंदिर की गणना की जा सकती है। परन्तु अन्य सूर्य मंदिरों से कोणार्क मंदिर की योजना अलग है। इस मंदिर की योजना शिल्पी की विलक्षण कल्पनाशीलता का परिचय देता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि सूर्य भगवान सात घोड़े से जूते रथ पर सवार होकर विचरण करते हैं और शिल्पी ने सात घोड़े से जुते रथ को पत्थरों में साकार किया है। इस मंदिर को देखने से ऐसा लगता है कि सात अलंकृत अश्व रथ को खींच रहे हैं। रथ के दोनों ओर बारह–बारह पहिये बने हुए हैं।

इस मंदिर की निर्माण योजना में उड़ीसा–शैली के अनुरूप चार कक्ष है– देवल, जगमोहन, नटमंडप तथा भोगमंडप। यह मंदिर भी इस शैली के

अन्य मंदिरों के तरह एक बड़े प्रांगण में एक विशाल चबूतरे पर खड़ा है। इस प्रांगण की लम्बाई 865 फुट और चौड़ाई 540 फुट है जो एक उॅची चाहरदीवारी से घिरा है। इस चाहरदीवारी में प्रवेश के लिए तीन ओर प्रवेश द्वार है।

मंदिर में देवल तथा जगमोहन एक ईकाई के रूप में परस्पर संलग्न है लेकिन जगमोहन से देवल अधिक लम्बा चौड़ा और उॅचा है। देवल की नींव से संलग्न तीन लघु देवालय थे जिनमें प्रतिमाएॅ थी। देवल के अन्दर एक वर्गाकार गर्भगृह था जिसकी छत चार स्तम्भों पर आश्रित थी। अन्दर की ओर से गर्भगृह की दीवार एकदम सादी है। गर्भगृह के अन्दर सूर्य की प्रस्तर निर्मित मानवाकार प्रतिमा प्रतिष्ठित है। इसका प्रवेश द्वार सदा के लिए बंद कर दिया गया है। इसका शिखर धरातल से 55 फुट उॅचा था जिसकी बनावट ठोस थी। इसका सम्पूर्ण भाग नष्ट हो चुका है। केवल नींव मात्र ही शेष है इसलिए इसकी कल्पना पूरी तथा भुवनेश्वर के मंदिरों के शिखर को देखकर की जा सकती है।

मुख्य मंदिर से संलग्न जगमोहन है। इन दोनों कक्षों के बीच 25 फुट के अन्तराल की योजना है। जगमोहन भी वर्गाकार है जिसकी प्रत्येक भुजा की लम्बाई 100 फुट है। इसके दो प्रमुख अंग है नीचे का वर्गाकार भाग अथवा वड तथा उपर का शुंडाकार भाग अथवा पीड। निचला भाग वर्गाकार होते हुए भी प्रक्षेपणों के कारण घनाकार हो गया है। बड की चौड़ाई उसकी उॅचाई से दुगुनी, परन्तु सम्पूर्ण मंदिर की चौड़ाई एवं उॅचाई समान है। नष्ट होने के बाद भी यह उसी रूप में वर्तमान है जिस रूप में निर्माण किया गया था।

जगमोहन के उपर बना 100 फुट उॅचा शुंडाकार छत की बनावट विशिष्ट है। इसमें प्रस्तर खंडों का प्रयोग इस प्रकार किया गया है कि एक के उपर एक तीन पंक्तियॉ बन गई है। प्रत्येक पंक्ति में पक्षेपय के कारण

छतरियॉ बन गई है। नीचे की दो पंक्तियों में छह–छह तथा उपर वाली पंक्ति में पॉच छतरियॉ हैं। दो पंक्ति के बीच चौरस स्थान हैं जिनमें मानवाकार मूतियॉ उत्कीर्ण है। पंक्तियों के उपर शुंडाकार छत की चारो भुजाएँ शीर्ष बिन्दु पर आकर मिल गई है जिसके उपर आमलक स्थित है। यह आमलक धारीदार है।

उड़ीसा शैली की अन्य शुंडाकार छतों से इसका आकार अधिक विस्तृत है। इसकी विशालता के कारण भारग्रहण हेतु एक और छत का निर्माण किया गया। यह भी अप्रर्याप्त होने पर भारग्रहण हेतु लोहे के शहतीर प्रयुक्त हुए। ऐसा अनुमान किया जाता है कि छत के निर्माण के पूर्व, जगमोहन की नींव को सुदृढ़ बनाने के लिए उद्वेश्य से, सम्पूर्ण भीतरी भाग बालू एवं मिट्टी से भर दिया गया होगा जो बाद में प्रवेश द्वार से निकाल दिया गया होगा। सम्पूर्ण मंदिर का यही अंश वर्तमान है।

मंदिर में तीन ओर प्रवेश द्वार बने हैं जिनमें सीढ़ियॉ बनी है। मुख्य प्रवेश द्वारा पूरब की ओर है। मंदिर के उॅचे चबूतरे पर जाने के लिए चौड़ी सीढ़ियॉ बनी है, जिसके एक ओर तीन तथा दूसरी ओर चार सुन्दर शक्तिशाली घोड़े बने हैं। ये घोड़े ऐसे जीवंत तथा शक्ति एवं स्फूर्ति से पूर्ण दिखाई पड़ते हैं मानो ये हवा में उड़ रहे हों और सारथी को इन्हें संभालना कठिन हो रहा है।

नटमंडप एक उॅचे चबूतरे पर निर्मित है जो देवल तथा जगमोहन से पृथक है। यह मुख्य मंदिर से 30 फूट की दूरी पर मुख्य प्रवेश द्वार के सामने खड़ा है। पर्सी ब्राउन के अनुसार नटमंडप एवं मुख्य मंदिर के बीच एक कीर्ति स्तंभ खड़ा था, जिसपर अर्जुन की मूर्ति उत्कीर्ण थी।

भोगमंडप मंदिर की चाहरदीवारी के दक्षिण पूर्व की ओर स्थित है। भोगमंडप की दीवारें विशालकाय मूर्तियों से अलंकृत थी परन्तु अब वे मूर्तियाँ अपने मौलिक स्थान पर नहीं दिखाई पड़ती। इसमें कुछ मूर्तियॉ अत्यन्त

सजीव है। इन मूर्तियों में दो यौद्धा घोड़े अपनी शक्ति, गतिशीलता एवं आकर्षण के लिए उल्लेखनीय है। इनके साथ अंकित अंगरक्षक की मूर्तियॉ भी आकर्षक है।

कोर्णाक मंदिर विभिन्न प्रकार की मूर्तियों से अलंकृत है जो भारतीय शिल्पकला के अनुपम उदाहरण है। मंदिर की वाह्य दीवारें अनेक मूर्ति सहित रथिकायें से सजी है। इनमें देवी देवता की मूर्तियॉ, मिथुन मूर्तियॉ तथा अन्य विषयक मूर्तियॉ मिलती है। इनसे ऐतिहासिक कथानक, लोक कथाऍ, संगीत प्रदर्शन तथा गार्हस्था जीवन की भी झांकियॉ मिलती है। इन मूर्तियों में अशलील मूर्तियों की बहुलता है। संभवतः ऐसी मूर्तियॉ बज्रयानी सिद्धों तथा शाक्त तंत्रों से प्रभावित है। मंदिर का बाह्य भाग निस्संदेह अशलील मूर्तियों से भरा है परन्तु इसके बड़े कक्ष का भीतरी भाग बिल्कुल सादा है जो इस माया–मोह, तृष्णा आदि को छोड़कर शुद्ध मन से ईश्वर की भक्ति के फलस्वरूप ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

कोणार्क मंदिर के चाहरदीवारी से घिरे प्रांगण में अन्य कई पूरक कक्ष, मूर्ति कक्ष तथा स्वतंत्र रूप से खड़े अलंकृत स्तम्भ है। दक्षिण–पश्चिम में रामचन्द्र मंदिर है।

स्थापत्य कला के दृष्टिकोण से कोर्णाक मंदिर अलौकिक तथा अनुपम है। इसमें बिना गारे चूना के प्रयोग के प्रस्तर खंडों को एक दूसरे पर इस प्रकार सजाया गया है कि संतुलन बना रहे। कुछ विद्वान यह मानते हैं कि यह मंदिर कभी पूर्ण रूप से बना ही नहीं। पर्सी ब्राउन की भी ऐसी ही मान्यता है। उनकी मान्यता है कि शिखर की शीर्षभाग की योजना इतनी विशाल थी कि उसे निर्धारित स्थान पर कभी निर्मित ही नहीं किया जा सकता। परन्तु सुश्री एलिस बोनर का कथन है कि यह मंदिर न केवल पूर्णतया निर्मित किया गया अपितु यह तीन सौ वर्षों से ही अधिक दिनों तक शालीनता के साथ खड़ा रहा। उन्होंने अपनी पुस्तक कोणार्क में इस मंदिर

का रेखाचित्र दिया है। इस मंदिर के शिखर के उपर एक सिंह की विशाल मूर्ति थी जिसका वजन 20 टन था। यह मूर्ति सन् 1610 ई0 में लगभग मुख्य कक्ष को खंडित करते हुए धरातल पर आ गिरा। मुगल सम्राट अकबर के एक नवरत्न अबुल फजल ने 1585 ई0 में इसे देखकर यह कहा कि रूखे से रूखे स्वभाव का व्यक्ति भी इसे देखकर विमुग्ध हो जाएगा। पर्सी ब्राउन भी इसे पूरबी स्थापत्य कला की महान उपलब्धि कहते हैं।